www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपना ही नहीं समाज का भी हित सोचें

— श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपना ही नहीं समाज का भी हित सोचें

समाज के विकास के साथ ही व्यक्ति के विकास की सम्भावना जुड़ी है। समाज से प्रथक रहकर अथवा उसके हित की ओर से विमुख होकर कोई व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता। जब-जब मनुष्यों के बीच सामाजिक भावना का ह्रास होता है तब-तब समाज में कलह और संघर्ष की परिस्थितियां बढ़ने लगती हैं। चारों ओर अशान्ति और असुरक्षा का वातावरण व्याप्त रहने लगता है। समाज की प्रगति रुक जाती है। और उसी के साथ व्यक्ति की प्रगति भी। इसी हानि से बचाने के लिए हमारे समाज के निर्माता ऋषियों ने वेदों में स्थान-स्थान पर पारस्परिक सहयोग और सद्भावना का उपदेश दिया है—बताया गया है—

"अज्येष्ठासो अकनिष्ठासः स भ्रातरो वावृधु सौभगाय"

इस वेद वाक्य का आशय यही है कि हम सब प्रभु की सन्तान एक दूसरे के भाई-भाई हैं। हममें न कोई छोटा है और न बड़ा। यह एक उत्कृष्ट सामाजिक साधना है। इसी भावना के बल पर ही तो भारतीय समाज संसार में सबसे पहले विकसित और समुन्नत हुआ। इसी भावना के प्रसाद से उसके मनीषियों ने संसार में सभ्यता का प्रकाश फैलाने का श्रेय पाया है और इसी बन्धुत्व की भावना के आधार पर वह जगद्गुरु की पदवी पर पहुँचा है।

इसके विपरीत जब से भारतीय समाज की वैदिक भावना क्षीण हो गई वह पतन की ओर फिसलने लगा और यहाँ तक फिसलता गया कि आर्थिक राजनैतिक और धार्मिक गुलामी तक भोगनी पड़ी है। किन्तु अब वह समय फिर आ गया है कि भारतीय समाज अपनी प्राचीन बन्धु भावना को समझे, उसे पुनः अपनाये और आज के अशान्त संसार में अपने वैदिक आदर्श की प्रतिष्ठा द्वारा शान्ति की स्थापना का पावन प्रयत्न करे।

शाश्वत सिद्धान्त है कि दूसरों को उपदेश देने और मार्ग दिखलाने का वही सच्चा अधिकारी होता है जिसका आचरण स्वयं उसके आदर्श के अनुरूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो । इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि पहले हम अपनी भावनाओं और व्यवहार में सुधार करें, उसमें पारस्परिक भाईचारे का समावेश करें और तब संसार के सामने 'वसुधैव-कुटुम्बकम्' का आदर्श उपस्थित करें । इस सुधार को सरल बनाने के लिए सबसे पहले व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध समझ लेना होगा । एक के विचारों और कार्यों का दूसरे पर क्या प्रभाव पड़ता है यह जान लेना होगा ।

जीवन निर्वाह करने के लिए कुछ साधन परिस्थितियाँ और कुछ सहयोग अपेक्षित होता है । यह सब सुविधाएँ समाज में समाज द्वारा ही प्राप्त होती हैं । एक अकेला व्यक्ति न तो इन्हें उत्पन्न कर सकता है और न इनका उपयोग । इनके लिए उसे समाज पर ही निर्भर होना होगा । विभिन्न शिक्षण संस्थायें, उनमें कार्य करने वाले व्यक्ति जीवन निर्वाह के साधन, ज्ञान विज्ञान की सुविधाएँ अन्वेषण आविष्कार, व्यापार, व्यवसाय अनुभव और अनुभूतियाँ आदि मानव विकास के जो भी साधन माने गये हैं उनकी उत्पत्ति समाज के सामूहिक प्रयत्नों द्वारा ही होती है । किसी का मस्तिष्क काम करता है तो किसी के हाथ पांव, किसी का धन सहयोग करता है तो किसी का साहस । इस प्रकार जब पूरा समाज एक गति और एक मति होकर अभियान करता है तभी व्यक्ति और समूह दोनों के लिए कल्याण के द्वार खुलते चले जाते हैं एक अकेला व्यक्ति संसार में कभी कुछ नहीं कर सकता ।

समाज से पृथक रहकर अथवा समाज के सहयोग के बिना व्यक्ति एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता । कोई विशेष प्रगति कर सकना तो दूर इस पारस्परिकता के अभाव में जीवन ही संदिग्ध हो जाय । जीवन की सुरक्षा और उसका अस्तित्व समाज के साथ ही सम्भव है । समाज की शक्ति का सहारा पाकर ही हमारी व्यक्तिगत क्षमताएँ एवं योग्यताएँ प्रस्फुटित होकर उपयोगी बन पाती हैं । यदि हमारे गुणों और शक्तियों को समाज का सहारा न मिले तो वे निष्क्रिय रहकर बेकार चली जाएँ । उनका लाभ न तो स्वयं हमको होगा और न समाज को । सच्ची बात तो यह है कि व्यक्तिगत जीवन नाम की कोई वस्तु ही संसार में नहीं है । हम सब व्यक्तिगत रूप में दीखने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुए भी समष्टि रूप में जीते हैं। व्यक्तिवाद को त्यागकर समष्टिगत जीवन को महत्व देना ही हम सबके लिए हितकर तथा कल्याणकारी है। समष्टिगत जीवन समूहगत उन्नति ही हमारा ध्येय होना चाहिए। वह कितना विकसित और शक्तिशाली बनता जाएगा। उसी अनुपात से हमारा व्यक्तिगत जीवन भी चढ़ता जाएगा।

समाज जब समग्र रूप से निर्बल हो जाता है तो उस पर सामूहिक संकटों का सूत्रपात होने लगता है। उस सामूहिक संकट में व्यक्तिगत रक्षा कर सकना सम्भव नहीं होता। निर्बल समाज पर जब बाहरी आक्रमण होता है अथवा कोई संक्रामक रोग फैलता है तब व्यक्ति उससे अपनी रक्षा कर पाने में सफल नहीं हो पाता फिर वह अपने आप में कितना ही शक्तिशाली एवं स्वस्थ क्यों न हो। ऐसी समूहगत संक्रान्ति से सामूहिक रूप से ही रक्षा सम्भव हो पाती है। समाज की शक्ति ही व्यक्ति की वास्तविक शक्ति है। इस सत्य को कभी भी न भूलना चाहिए। अपनी शक्ति का उपयोग एवं प्रयोग भी इसी दृष्टि से करना चाहिए जिससे हमारी व्यक्तिगत शक्ति भी समाज की शक्ति बने और उलट कर वह व्यापक शक्ति हमारे लिए हितकारी बन सके।

समाज की शक्ति ही व्यक्ति की वास्तविक शक्ति मानी गई है—व्यक्ति का अकेला शक्तिशाली होना कोई अर्थ नहीं रखता। अस्तु समाज को शक्तिशाली बनाने के लिए हमें चाहिए कि हम अपने समग्र व्यक्तित्व को उसमें ही समाहित कर दें जो कुछ सोचें समाज को सामने रखकर सोचें, जो कुछ करें समाज के हित के लिए करें। यदि हम ऐसी समष्टि चेतना को स्थान नहीं देते और अपने व्यक्तित्व की सत्ता की अलग कल्पना कर उसी तक सीमित रहते हैं तो एक प्रकार से समाज को निर्बल बनाने की गलती करते है। हमारी यह अहंकारपूर्ण भावना का समाज विरोध कार्य होगा। इसका कुप्रभाव समाज पर पड़ेगा ही पर हम स्वयं भी इस असहयोग से अछूते न रह सकेंगे। हमारा यह सामाजिक पाप प्रकाश में आ जाएगा और तब हमको पूरे समाज के आक्रोश तथा असहयोग का लक्ष्य बनना पड़ेगा। हम जैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करेंगे वैसा ही भरना होगा। इस न्याय से बच सकना सम्भव नहीं।

इस संकीर्ण मनोवृत्ति का कुप्रभाव मनुष्य के व्यक्तित्व पर एक प्रकार से और भी पड़ता है। वह है उसका मानसिक पतन। ऐसे असामाजिक वृत्ति के लोगों का अन्तर आलोक हीन होकर दरिद्री बन जाता है। उसके सोचने और समझने की शक्ति न्यून हो जाती है। उसकी क्षमताओं, योग्यताओं और विशेषताओं का कोई मूल्य नहीं रहता।

असामाजिक भाव वाले व्यक्तियों की शक्ति को समाज अपने लिए खतरा समझने लगता है और कोशिश करता है कि वे जहाँ की तहाँ निष्क्रिय एवं कुण्ठित होकर पड़ी रहें। उन्हें विकसित अथवा सक्रिय होने का अवसर न मिले। ऐसे प्रतिबन्धों के बीच कोई असहयोगी व्यक्ति अपना कोई विकास कर सकता हैं--यह सर्वथा असम्भव है। समाज के निषेध से जहाँ व्यक्ति की असाधारण शक्ति भी सीमित और वृथा बन जाती है, वहां समाज में समाहित होकर किसी की न्यून एवं साधारण शक्ति भी व्यापक और असाधारण बन जाती है। अपनी एक शक्ति समाज के साथ सयोजित कर व्यक्ति असंख्य शक्तियों का स्वामी बन सकता है।

समाज को अपनी शक्ति सौंपकर उसकी विशाल शक्ति को अपनाने के लिए हमें चाहिए कि हम अपने भीतर सामूहिक भावना का विकास करें। हमारा दृष्टिकोण जीवन के क्षेत्र में अपने पर से प्रेरित न होकर समाज की मंगल-भावना से प्रेरित हो। हम अपना कदम उठाने से पूर्व अच्छी तरह यह सोच लें कि इसका प्रभाव समाज पर क्या पड़ेगा। यदि हमें अपने उस कदम में समाज का जरा भी अहित दिखलाई दे तो तुरन्त ही उसे स्थगित कर देना चाहिए। हमारे लिए वे सारे प्रयत्न त्याज्य होने चाहिए जिनमें व्यक्तिगत लाभ भले ही दिखता हो पर उससे समाज का कोई अहित होने की सम्भावना न हो।

मनुष्य एक सहकारी प्राणी है। सहकारिता ही उसकी अद्यावधि प्रगति का केन्द्रीय कारण एवं आधार है। एकाकी मनुष्य की तो अस्तित्व-रक्षा भी असम्भव है। जन्म से लेकर विकास की विभिन्न मंजिलों को पार करते हुए मृत्यु की गोद में सोने तक मनुष्य औरों का मुहताज होता है। फिर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रेम, सदाचार, सेवा, न्याय-नीति, सौजन्य, सौहार्द, उदारता, सहानुभूति आदि आनन्ददायक प्रवृत्तियों की तो बात ही क्या ? एकाकी मनुष्य के लिए तो उनसे परिचित हो पाना भी सम्भव नहीं । सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक-औद्योगिक-वैज्ञानिक विकास के आधार सामूहिक प्रयत्नों से ही एकत्र होते रहे हैं । मनुष्य के सुख-दुःख का बहुलांश दूसरों की क्रिया एवं व्यवस्था पर अवलम्बित है ।

मनुष्य ही क्यों, वृक्ष, वनस्पतियों, कीट-पतंगों में भी सामूहिकता एवं सहयोग की प्रवृत्ति भरपूर है । धान के खेतों में चने के पौधों को उपयोगी अंश मिलता है जो कि धान के पौधे छोड़ जाते हैं । चना की फसल उस अंश का सदुपयोग कर बढ़िया बनती है । फिर चने के पौधे भी धान के लिए उपयोगी अंश छोड़ देते हैं । अरहर ज्वार साथ-साथ बोए जाते हैं । आहार नाइट्रोजन खींचकर ज्वार को भी उसका समुचित अंश देती रहती है और दोनों विकसित होते हैं । आम की सघन छाया में पान की बेलें और नारियल की छाया में इलायची फूलती-फलती हैं । चीकू का एक पेड़ अकेले में जितने फल देता है समूह में होने पर प्रत्येक पेड़ उससे अधिक फल देता है ।

कीट-पतगों के जीवन में सामाजिकता भरपूर होती है । चीटी की सामूहिकता प्रसिद्ध है मधुमक्खियों द्वारा मधु संचय सामूहिकता की शक्ति द्वारा ही सम्पन्न होता है । कोई चूहा जब किसी दीमक के किले में घुसता है तो सैकड़ों दीमक संगठित आक्रमण कर अपने डंकों के प्रहार से उसे मार डालते हैं । पशु-पक्षियों में भी सामूहिकता की प्रवृत्ति के सुन्दर स्वरूप की झाँकी दिखाई पड़ती है । हाथी, हिरन, गाय आदि सामूहिकता के के लाभों से भली-भांति परिचित होते हैं और लाभ उठाते हैं ।

जीवाणुओं की सामूहिक हलचल ही जीवनगति है । एकाकी जीवन असंभव ही है । यह समस्त विश्व एक शरीर की ही तरह है । मनुष्य इसी का एक अङ्ग मात्र है । इसलिए सामूहिकता उसकी नियत ही है । अहकार में की गई सामूहिकता की अवहेलना घातक सिद्ध होती है । समाज से अलगाव व्यक्ति को एकाकीपन तथा अभावों की पीड़क अनुभूति प्रदान करता है । सामूहिकता के अनेक अनुदान मनुष्य को विभूतिवान बनाते हैं । जो इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्पदाओं का सदुपयोग नहीं जानता वह दरिद्र ही रह जाता है।

यों फूल का अपना अलग महत्व भी है। पर महापुरुष या देवता के गले में लिपटने का सौभाग्य माला में गूँथने पर ही प्राप्त होता है। यह गुँथना तभी सम्भव है जब फूल सूत्रात्मा को आत्म-समर्पण कर दे। इस समस्त विश्व का सूत्रात्मा परमात्मा है। माला की मणियों या पुष्पों के मध्य पिरोए हुए धागे की तरह वही समस्त प्राणियों को परस्पर एक सूत्र में बाँधे बसन्त में वही प्रतिभासित हो रहा है। उस परमात्म सत्ता के बन्धन में बंधे रहना ही श्रेयस्कर है। पृथकता के अहंकार से एकाकीपन की तुच्छता ही हाथ लगने वाली है।

विशाल सागर की हिलोरों में से प्रत्येक लहर का अस्तित्व भिन्न दिखाई तो पड़ सकता है पर अलगाव की आकाँक्षा उन्हें बिखराव ही देगी, वे क्षणभर में प्रचंड सूर्य किरणों से वाष्पीकृत हो जायेंगी या किसी गड्ढे में पड़कर सूख जायेंगी। उनकी सरसता समाप्त हो जाएगी। ज्वार भाटे का दृश्य वे सामूहिकता द्वारा ही पैदा करती रहती हैं तथा स्वयं भी उन जीवन क्रीड़ाओं का आनन्द लेती रह सकती हैं। गरजती हुई ध्वनि नौकाओं को उलट देने वाली शक्ति भी तभी तक है जब तक वे अपने पृथक अस्तित्व की मूढ़ आकाँक्षा नहीं पालतीं।

ईंटों की सामूहिकता विशाल और आकर्षक भवन के रूप में गरिमा मंडित होती है। बादल की अंशभूत बूँदें मुक्त विहार तथा लोक जीवन में रस संचार की सुविधा एवं गौरव अर्जित करती हैं। पुर्जों का समन्वय ही मशीन के रूप में बड़े-बड़े क्रियाकलाप सम्पादित करता है। योद्धाओं का समूह ही सेना कहलाता है और कर्मचारियों का संगठित स्वरूप विशेष ही शासनतंत्र बनता है। अन्तरिक्ष-यात्राएँ वैज्ञानिकों के सामूहिक प्रयासों का ही परिणाम है। मानव को उपलब्ध सम्पूर्ण ज्ञान राशि ही सामूहिक साधना और अनुभूति का परिणाम है। ज्ञान-विज्ञान और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशीलता का एकमेव आधार सामूहिकता ही है।

वस्तुतः व्यक्ति समूह का एक अविछिन्न घटक मात्र है सामूहिकता में ही उसका विकास संभव है। व्यक्तिवाद, संकीर्णता से प्रेरित क्षुद्र स्वार्थ-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधनायें उसे दरिद्र और दयनीय ही बनाती है। दूसरों को पीछे छोड़कर एकाकी आगे बढ़ जाने की नई योजनाएँ अन्ततः अप्रत्याशित आपत्तियों से घिरी असफलता में ही जाकर समाप्त होती हैं। पृथकता तभी तक लाभदायक दीखती है जब तक वह कल्पना में सीमित है, व्यवहारिक क्षेत्र में उतरने पर उसका खोखलापन ही सामने आता है।

समाज से अपने को पृथक मानने की परिणति आशंका अनिश्चित और और भय से भरी मनःस्थिति में ही होती है। निजी स्वार्थों के लिए नीति मर्यादाओं का उल्लंघन कर समूह स्वार्थ की उपेक्षा करते चलने पर उसे समष्टि सहयोग से तो वंचित रहना ही पड़ता है जो आनन्द, उल्लास और संतोष का प्रमुख आधार है साथ ही प्रतिक्रिया स्वरूप न केवल लक निन्दा ही मिलती है। अपितु अन्ततः सामाजिक दण्ड भी भोगना ही पड़ता है। यदि धूर्ततापूर्ण छीना-झपटी से समाज में प्रतिष्ठा बना भी जाए तो भीतर असुरक्षा आत्मीयता, आत्मग्लानिता अशान्ति और असंतोष ही बढ़ता है।

समिधाओं का एकाकी उपयोग विकृतियों को ही पैदा करता है। भीतर आत्मग्लानि परिवार में आपा धापी मचाती है, बाहर ईर्ष्या द्वेष की वृद्धि होगी। अन्त में तिरस्कार, पतन और एकाकीपन ही हाथ लगता है। उस समय सामूहिकता की तीव्रतम इच्छा मन को मथती ललचाती है और सह का विश्वास मूखो देने पर तो एकाकीपन की घुटन बढ़ती ही जाती है।

व्यक्तिगत बड़प्पन का फेर हमें अन्ततः संकीर्णताओं में ही घेरकर रख देता है। आनन्द, उल्लास का मार्ग यही है कि अपने आपको समाज का एक घटक अनुभव किया जाए। समूह का एक अङ्ग हम हैं ही अतः उसी रूप में रहे। सबकी उन्नति में ही हमारी उन्नति है, यह तथ्य पहचानने पर ही प्रगति और उत्कर्ष सम्भव है उपलब्ध प्रतिभा सम्पदा एवं गरिमा समाज का ही अनुदान है उसे सज्जनतापूर्वक समाज को लौटा देना ही कर्तव्य भी है और वहीं सच्ची उपलब्धियाँ भी बनती हैं।

क्र०-१६७ प्र०-युग निर्माण योजना मु० युग निर्माण प्रेस मथुरा, मू० ४० पैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org